ादि हैं.

रीतिकाल

रीतिकाल की कालावधि में भक्ति आदि समस्त मान्य वृत्तियाँ पीछे रह गयी थीं. यदि भक्ति भाव कहीं दिखाई ता है, तो वह भी विशुद्ध शृंगारिकता से सम्पृक्त है और ाँसलता से बोझिल. रीतिकाल की रामय-विषयक सीमा के विषय में हमें कोई विवाद दिखाई नहीं देता है. आचार्य

Scanned with CamScanner

रामचन्द्र शुक्ल ने रीति काव्य की यही सीमा स्वीकार की है. कुछ लोगों की मान्यता है कि जिस युग में रीति-निरूपण अथवा रीति प्रभावित ग्रन्थों के निर्माण की प्रतियोगिता रही, उसका समय 1700 से 1900 तक है. इन निश्चित संवतों को स्वीकार करने में कुछ लोगों को आपत्ति है. इसका कारण यह है कि रीति कवियों के कुछ ग्रन्थ इस सीमा से आगे-पीछे रखे जाते रहे हैं. उदाहरणार्थ चिन्तामणि कृत 'रस विलास' और मतिराम कृत 'रसराज' सन् 1643 से दस वर्ष पूर्व तथा ग्वाल कवि की 'रसरंग' आदि रचनाएँ 1843 ई. में लगभग 15 वर्ष बाद की ठहरती हैं. कुछ ऐसे कवि भी हैं, जिनका जन्म भक्तिकाल में हुआ, किन्तु रचनाएँ रीतिकाल में लिखी गयी हैं. ऐसी स्थिति में रीतिकाल की सीमाएँ हमें सामान्य रूप से 17वीं शताब्दी के मध्य से 19वीं शताब्दी के मध्य तक मान लेनी चाहिए.

जहाँ तक विषय सम्बन्धी सीमा का प्रश्न है वह भी स्पष्ट है. इस काल का विषय प्रमुखतः शृंगार रहा है. भाव और रस की दृष्टि से यह काल घोर शृंगार का काल है और सभी कवि कमोबेश रूप सौन्दर्य वर्णन की इस सीमा में विचरण करते रहे हैं. कला शिल्प की दृष्टि से अलंकार-प्रियता, छन्दप्रियता और शैली चमत्कार को इन कवियों ने विशेष महत्व दिया है. शृंगार और चमत्कार प्रदर्शन ये दोनों ही इस काल की सीमाएँ हैं. इन दोनों सीमाओं में सिमटकर जो रीतिकालीन साहित्य लिखा गया है वह अपवादस्वरूप ही शृंगारेत्तर विषयों की ओर मुड़ा है.

रीतिकाल के प्रवर्तक का श्रेय किसे मिले ? इस समस्या के समाधान से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि प्रवर्तक का अर्थ क्या है ? और कौनसा कवि किसी भी काल विशेष का प्रवर्तक होने की क्षमता रखता है ? प्रवर्तक का अर्थ है–किसी परम्परा या प्रवृत्ति की नींव डालने वाला. जो किसी विशेष प्रवृत्ति को चलाए वह प्रवर्तक होता है. इसके साथ ही उस व्यक्ति का प्रतिभाशाली होना, गम्भीर होना, मनीषी व चिन्तक होना और दूसरों को अपने अनुसार चलाने की क्षमता से युक्त होना भी अनिवार्य है. किसी प्रवृत्ति को जन्म देना ही प्रवर्तक के लिए पर्याप्त नहीं, अपितु यह भी आवश्यक है कि उसके द्वारा प्रवर्तित मार्ग के अनुसरणकर्त्ता भी हैं या नहीं. जब तक यह नहीं होता, तब तक किसी भी व्यक्ति को प्रवर्तक होने का श्रेय नहीं दिया जा सकता.

रीतिकाल का प्रवर्तक कवि कौन ?

Scanned with CamScanner